3

श्रृगालवदना देवी, सियारी माता : कुछ समस्यात्मक अंकन

डॉ0 नीलकण्ठ पुरुषोत्तम जोशी

ब्राह्मणधर्म के देवतासंघ में वराह, सिंह, गज, अश्व, वानर, वृष आदि पशुओं के मुखवाले देवों के समान ही पशुमुखी देवियों का भी समावेश है, जिनके हमें मूर्तिकला में भी यत्र-तत्र दर्शन होते हैं। उदाहरण के लिए वाराही, नारसिंही, वैनायिकी, महिषमुखी एवं वृकमुखी दुर्गा, सिंहमुखी मातृका आदि के प्रतिमागत अंकनों से हम परिचित हैं। उसी क्रम में श्रृगाल या सियार के मुख वाली देवी का अंकन विचारणीय है। प्रथमतः हम इस प्रकार की मूर्तियों की चर्चा कर लें, तत्पश्चात् उनसे सम्बन्धित साहित्यिक उल्लेखों की बात करेंगे।

(1) बर्लिन (जर्मनी) के म्यूजियम फ्यूर एशियाटिश्च कुंस्ट में मध्यभारत (?) से प्राप्त प्रतिहार कला की एक श्रृगालमुखी चतुर्भुजा देवी की खण्डित प्रतिमा है (चित्र 1)[1] जिसके बायीं ओर के हाथ तथा स्तनों के नीचे वाला भाग टूट चुका है। दाहिनी ओर के साधारण हाथ में कपाल या खप्पर तथा अतिरिक्त हाथ में त्रिशूल हैं। देवी का छोटा सा मुकुट, घुंघराली लटाएँ तथा खण्डित पद्मप्रभामण्डल दर्शनीय है। इसकी पहचान डॉ0 हर्टल ने 'शिवदूती' के रूप में की है।

(2) इसी संग्रहालय के एक दूसरे छोटे से शिला फलक पर ठीक ऐसे ही मुख वाली दो देवियाँ एक दूसरे की ओर मुँह किये पुष्पांकित मोढों पर बैठी हैं (चित्र 2)[2]। ये दो हाथ वाली हैं तथा हाथ में लिए कपाल से कुछ पान कर रही हैं और आपसी चर्चा की मुद्रा में हैं। प्रभामण्डल, उड़ते हुए विद्याधर, तथा उपासक एवं उपासिका का अंकन इनके देवत्व के निश्चित सूचक हैं। कला की दृष्टि से यह प्रतिहार कला (7वीं-8वीं शती) का सुन्दर नमूना है। कालक्रम की दृष्टि से यह ऊपर वाली प्रतिमा के कुछ बाद की है।

(3) उत्तर प्रदेश के झाँसी जिले में एक स्थान है बरूआसागर। यहाँ चन्देल कला (9वीं शती) का एक मन्दिर है 'जराई मंदिर'। इस मंदिर के गर्भगृह का मुख्यद्वार पाँच तोरण पट्टिकाओं से सुशोभित हैं, जिन पर विविधि देवमूर्तियों का भरपूर अंकन है। इन तोरणपट्टिकाओं में ऊपर से दूसरी पट्टिका पर चार-चार की संख्या में लोकपाल बँटे हुए हैं। इनके बीचो बीच एक दूसरे के सामने मुँह करके बैठी देवियों का ठीक ऊपर जैसा अंकन हुआ है (चित्र 3-4)। मूर्तियाँ[3] अत्यधिक छोटी होने के कारण आयुधादि के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता; किन्तु पट्टिका पर लोकपालों के मध्य में इनकी स्थापना इनके विशेष महत्व को सूचित करती है।

झाँसी जिले के ही रेवन, भदरबाड़ा नामक स्थान पर 'सियारी माता' का मन्दिर है।[4] मन्दिर की मुख्य प्रतिमा सियार के मुख वाली कही गई है जो बीसभुजी है। जितेन्द्र कुमार के अनुसार हाथों में अभय, चक्र, खटक, शंख, पुष्पकलिका, अक्षमाला, कमण्डलु, पुष्प, त्रिशूल, घण्टा, कपाल, वज्र, दण्ड, सर्प आदि आयुध हैं। प्रकाशित चित्र में (चित्र 5) देवी का पशुमुख तथा बायें हाथ का त्रिशूल सुस्पष्ट है। देवी के आसन के नीचे सिंह बैठा है। जितेन्द्र

3.1: शिवदूती, बर्लिन संग्रहालय

3.3: जराई मंदिर, गर्भगृह का द्वार, बरूआ सागर

3.2: श्रृगालमुखी दो देवियाँ,
बर्लिन संग्रहालय

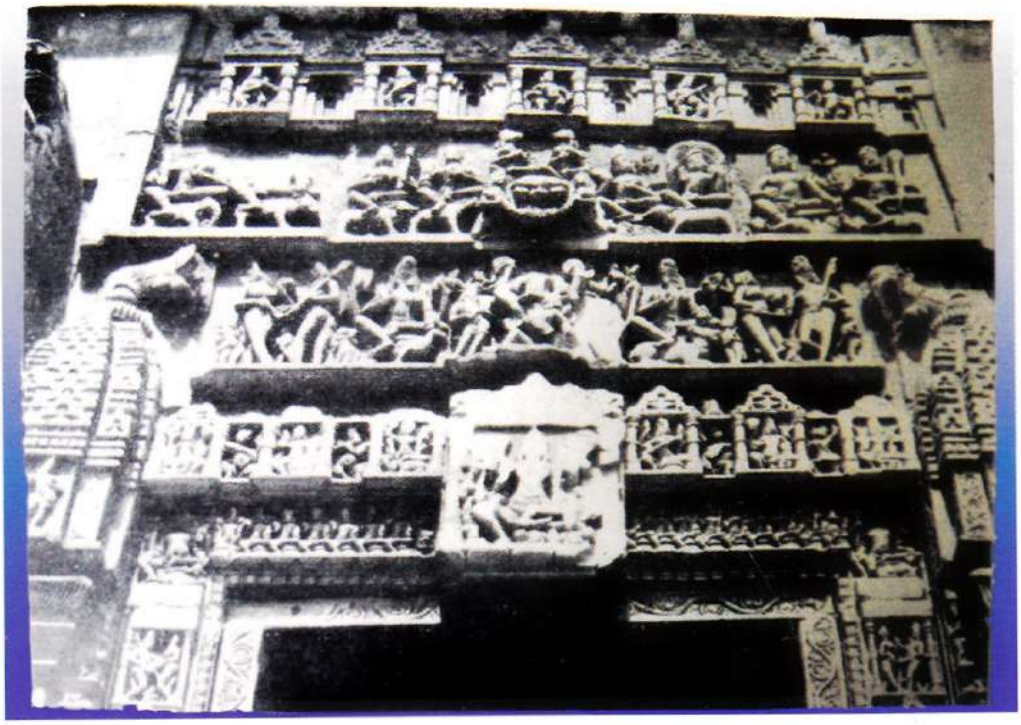

3.4: चित्र-3.3 का विशद भाग, बरूआ सागर

3.5: सियारीमाता, भदरबाडा

कुमार ने यह भी सूचित किया है कि जिले के मऊरानीपुर के आसपास के क्षेत्र के गावों में 'सियारी माता' के और भी मंदिर हैं।

ऊपर के क्रमांक 1 और 5 से एक बात स्पष्ट होती है कि विचाराधीन देवी का सम्बन्ध शैव सम्प्रदाय से है। जराई माता में स्थापित मूल विग्रह अब ओझल हो चुका है; किन्तु गर्भगृह के ललाटबिम्ब के रूप में विद्यमान प्रतिमा की ओर दृष्टिपात करना उचित होगा, क्योंकि साधारणतया गर्भगृह की मुख्य प्रतिमा और द्वार पर अंकित ललाटबिम्ब का निकट सम्बन्ध होता है। विचाराधीन ललाटबिम्ब किसी सोलह हाथ वाली देवी को अंकित करता है, पर वह भी क्षतिग्रस्त है। आयुधों में कदाचित वज्र, खड्ग और कमण्डलु हैं। इतने से तथा 'जराई' इस नाम से किसी सम्प्रदायविशेष का बोध नहीं होता। महाभारत में वर्णित मगध के राजा जरासन्ध के कथा प्रसंग में 'जरा' नाम की राक्षसी का उल्लेख आता है,[5] जिसकी घरों में पूजा होती थी और इसीलिए उसने घूरे पर फेंके शिशु के शरीर को सांधकर राजा बृहद्रथ को पुत्र दिया, जिसका नाम जरासंध हुआ। किन्तु इस 'जरा' का विचाराधीन जराई माता से कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध लक्षित नहीं होता।

अब साहित्य की ओर चलें। लक्षण ग्रन्थों में विष्णुधर्मोत्तर पुराण 'शिवा' नामक देवी का उल्लेख करता है[6]। तदनुसार शिवा चतुर्भुज है तथा हाथों में खड्ग, शूल, असृक्पात्र (रुधिर से भरा पात्र) तथा मांस (सामिष) लिये है। इसका मुख सियार या शृगाल का है। बर्लिन संग्रहालय की खण्डित प्रतिमा (क्रमांक 1) विष्णुधर्मोत्तर के वर्णन से बहुत कुछ मिलती जुलती है। 'शिवा' देवी का उल्लेख वामन पुराण[7] भी करता है। यह पुराण हमें बतलाता है कि शुम्भ और निशुम्भ से युद्ध करने के लिए देवी चण्डिका ने अपने शरीर के विभिन्न अंगों से माहेश्वरी, ब्राह्मी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही (यहाँ वाराही को शेषनाग पर आरूढ़ कहा गया है), माहेन्द्री तथा नारसिंही को उत्पन्न किया और जोर से गर्जना की। इस गर्जना को सुनकर शिव वहाँ पर आये और पूछने लगे कि 'मैं कौन सा कार्य करूँ?' शिव के आगमन के साथ ही देवी के शरीर से 'शिवा' का प्राकट्य हुआ। इसी नवागत देवी ने शुभ-निशुम्भ को सावधान करने के लिए उनके पास शिव को दूत रूप में भेजा, इसलिए यह शिवदूती भी कहलाई। आगे चलकर प्रत्यक्ष युद्ध में इस रूद्रदूती ने (शिवदूती ने) अपने अट्टहास से असुरों का नाश किया[8]। शिवा की उत्पत्ति तथा अपर नाम शिवदूती होने की बात कहते हुए मार्कण्डेय पुराण[9] बतलाता है कि यह अत्यन्त उग्रशक्ति (शक्तिरत्युग्रा) सौ सियारों के समान ध्वनि करने वाली (शिवाशतनिनादिनी) थी। स्पष्ट है कि उल्लेखित शिवा का असुर विनाशक अट्टहास सौ सियारों का निनाद ही था। इस प्रसंग में एक बात लक्षणीय है कि यहाँ शिवा या शिवदूती को स्पष्टतया सियार के मुख वाली या 'शृगालवदना' नहीं कहा गया है, यद्यपि 'शिवा' नाम से यह संकेत ध्वनित अवश्य होता है। कालक्रम में बहुत बाद का लिखा हुआ लक्षणग्रन्थ श्रीतत्वनिधि[10] केवल 'दूती' नाम से शिवदूती का उल्लेख करता है तथा उसे अष्टभुजा बतलाते हुए उसके आयुधों के रूप में रत्नपात्र, गदा, खेट (ढाल), पाश, पद्म, कुठार, खड्ग और अंकुश को गिनाता है। इस 'दूती' के मुख के विषय में वह भी मौन है। इन साहित्यिक वर्णनों से बर्लिन की शिवादूती (क्रमांक 1) तथा भदरवाड़ा की सियारी माता (क्रमांक 4) की कुछ हद तक पहचान तो हो जाती है। यह भी स्पष्ट होता है कि यह 'शृगालवदना' एवं 'शिवाशतनिनादिनी' 'शिवा', 'शिवदूती' या केवल 'दूती' नाम से जाने वाली देवी मूलतः चण्डिका या दुर्गा से सम्बद्ध है। समस्या तो बर्लिन सम्प्रदाय की दूसरी कलाकृति उत्पन्न करती है। यहाँ पर एक नहीं दो देवियाँ एक दूसरी की ओर

मुँह करके बैठी हैं, आपानक का आस्वाद ले रही हैं, और कदाचित् चर्चा भी कर रही हैं। विशेष तो यह है कि दोनों के मुख वहीं विद्यमान प्रथम प्रतिमा के समान हैं, उनके हाथ का पात्र भी ठीक वैसा ही है, अन्तर केवल हाथों की संख्या का है। इनके केवल दो ही हाथ है, चार नहीं। इनके 'देवियाँ' होने की बात सन्देहातीत है, जैसा प्रतिमा वर्णन में हम देख चुके हैं, पर पहचान कठिन है। यदि 'शिवा' या 'शिवदूती' हैं तो दो क्यों? यह समस्या और भी दुरूह तब होती है जब यही दो शृगालमुखी देवियाँ ठीक इसी प्रकार आसनस्थ रूप में बरूआसागर की जराई माता मंदिर के गर्भगृह के द्वार-तोरण पर दिखलाई पड़ती हैं और वह भी आठ लोकपालों के बीच में। उन्हें मिला हुआ स्थान स्पष्ट रूप से सूचित करता है कि स्तरीय दृष्टि से उनका महत्त्व लोकपालों से कम तो नहीं है, परन्तु दो बातें अवश्य महत्त्व की हैं। एक तो यह विचाराधीन तीनों कलाकृतियाँ मध्यभारत की हैं, तथा दूसरी यह कि जितेन्द्र कुमार के अनुसार महरानीपुर के आस-पास बुन्देलखण्ड के परिसर में 'सियारी माता' के कई स्थान हैं। यह उसकी लोकप्रियता का द्योतक है। सन्दर्भगत प्रतिमाओं से यह भी बात सामने आती है कि लगभग 7वीं से 9वीं शताब्दी या उसके बाद तक शृगालवदना देवी एक मान्य देवी के रूप में स्वीकृत रही होगी। मध्यभारत के समूचे क्षेत्र में योगिनियों का 9वीं-10वीं शताब्दी में खूब बोलबाला रहा, अतः इसका योगिनियों से सम्बन्ध होना भी असंभव नहीं है। कदाचित् स्थानीय लोककथाओं तथा लोकगीतों के परिशीलन से इसके विषय में कुछ अधिक और ठोस प्रकार की जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

संदर्भ

1. Herbert Härtel and Others, *Museum für Indische kunst Berlin, Katalog 1971,* Ausgestellte Werke, Pl. 16, Kat. Nr. 136.
2. *Museum für Asiatische Kunst, Berlin,* acc. no. MIK.I 5992.
3. S.D.Trivedi, *The Jarai Temple at Baruasagar, Jhansi,* 1985. fig. 5, p. 29.
4. जितेन्द्र कुमार, 'नवीन शैव प्रतिमाएँ', *Bulletin of Meseums and Archaeology, Lucknow, 45.* चित्र-1, पृ. 107.
5. *महाभारत,* सभापर्व, अध्याय 17-18.
6. विष्णुधर्मोत्तर पुराण- III. 73. 30-32, folio 345.

   शिवदूती तु कर्तव्या शृगालवदना शुभा।। 30
   आलीढस्थानसंस्थाना तथा राजंश्चतुर्भुजा।
   असृक्पात्रधरा देवी खड्गशूलधरा तथा।। 31
   चतुर्थं तु करं तस्यास्तथा कार्यं तु सामिषम्।
   .....।। 32

7. *वामन पुराण,* 56.12-16

   समायातोस्मि वै दुर्गे देह्याज्ञां किं करोमि ते
   तद्वाक्य समकालं च देव्या देहोद्भवा शिवा।। 12

यतस्तु सा शिवं दौत्ये न्ययोजयत नारद
ततो नाम महादेव्याः शिवदूतीत्यजायत।। 16

8. *वामन पुराण,* 56.22 - अट्टाहासैरपि रुद्रदूती।।

9. *मार्कण्डेय पुराण,* 88.22 - ततो देवीशरीरात्तु विनिष्क्रान्तातिभीषणा
चण्डिका शक्तिरत्युग्रा शिवाशतनिनादिनी।।

वही, 88.27 - यतः नियुक्तो दौत्येन तया देव्या शिवः स्वयम्
शिवदूतीति लोकेस्मिन् ततः सा ख्यातिमागता।।

10. *श्रीतत्त्वनिधि* - शिवदूती -

वामाधो रत्नपात्रं तदुपरि च गदाखेटपाशौ दधानां
दक्षैः पद्मं कुठारं तदुपरि च महाखड्गमप्यंकुशं च
मध्याह्नार्कप्रभाभां नवमाणिविलसद् भूषणामष्टहस्तां
दूतीं नित्यां त्रिनेत्रां सुरगणमुनिभिः स्तूयमानां भजेहम्।।

11. देखिये क्रमांक 4